फ़िल्म समीक्षा: 'लाइफ़ इज़ ब्यूटीफ़ुल'

सुमित कुमार

पी-एच.डी. शोधार्थी, हिन्दी अध्ययन केंद्र,
गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गांधीनगर

हिटलर और मुसोलिनी के ज़माने में यहूदियों के साथ हो रही अमानवीयता और इटली के राजनीतिक-सामाजिक घटनाक्रमों को चित्रित करती इस फिल्म का नाम है, 'लाइफ़ इज़ ब्यूटीफ़ुल' अर्थात् 'ज़िन्दगी खूबसूरत है'। अपने नाम को बिलकुल साकार करती यह फिल्म बहुत ही रोचक है। इसमें प्रेम कहानी, हास्य, नाटकीयता और साथ ही त्रास्दी भी है। इटली की यह फिल्म सर्वप्रथम 20 दिसम्बर 1997 को रिलीज़ की गई थी और बाद में 23 अक्टूबर 1998 को इसे यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ़ अमेरिका में और फिर पूरी दुनिया में प्रदर्शित किया गया था। इसके निर्माता जिआनलुगी ब्राशी तथा एलडा फेरी, निर्देशक रोबर्टो बेनाइनी और लेखक विनसेंजो सेरामी हैं। फिल्म की सबसे खास बात यह है कि इसके निर्देशक रोबर्टो बेनाइनी ने ही इस फिल्म के प्रमुख किरदार गुडो की भूमिका निभाई है और साथ ही उन्होंने फिल्म में सह-लेखन का कार्य भी किया है। रोबर्टो बेनाइनी के बारे में रोजर एबर्ट कहते हैं, "life is beautiful is the role he was born to play"¹ इस फिल्म में गुडो (रोबर्टो बेनाइनी) की पत्नी का किरदार निकोलेटा ब्राशी ने निभाया है, जो रोबर्टो बेनाइनी की असल ज़िन्दगी की भी पत्नी हैं।

इस फ़िल्म के हर पहलू यथा कथानक, विषय, पात्र, घटनाएँ, देश-काल-वातावरण, उद्देश्य आदि की विस्तार पूर्वक चर्चा करने से पूर्व फ़िल्म से जुड़ी कुछ महत्वपूर्ण बातें उल्लेखनीय हैं-

यह फ़िल्म लगभग दो घंटे की है और इसको बनाने में कुल लागत बीस मिलियन डॉलर लगी थी। बॉक्स ऑफिस पर यह फ़िल्म सुपरहिट रही तथा इसने लगभग 229.2 मिलियन डॉलर की कमाई पूरी दुनिया में की। इस फ़िल्म को कई पुरस्कार भी मिले जिसमें सबसे महत्वपूर्ण पुरस्कार 71 वां एकेडेमी अवॉर्ड (ऑस्कर)

1999 रहा। इसके अंतर्गत इस फिल्म को बेस्ट म्यूजिक, ओरिजनल ड्रमेटिक स्कोर तथा बेस्ट फॉरेन लैंग्वेज और साथ ही साथ रोबर्टो बेनाइनी को बेस्ट एक्टर का एकेडेमी

अवॉर्ड दिया गया। इस फिल्म को अन्य पुरस्कारों (एकेडेमी अवॉर्ड) के लिए भी चयनित किया गया यथा डायरेक्शन, फ़िल्म एडिटिंग, बेस्ट ओरिजनल स्क्रीन प्ले और बेस्ट पिक्चर।

इस फ़िल्म का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य सबसे महत्वपूर्ण है। जो समय फ़िल्म में दिखाया गया है वह 1939 के आसपास से लेकर 1945 के आसपास का है। ये वो समय था जब इटली में फासिस्टों और जर्मनी में नाजियों का बोलबाला था। वहाँ सत्ताधारियों में यहूदियों के प्रति नफ़रत भरी थी तथा लोगों (यहूदियों) को जान से मारा जा रहा था। हैवानियत की हद इतनी हो गई थी कि सैनिकों के निरीक्षण में मौत का कैम्प लगाकर सैकड़ों की तादात में यहूदियों को गैस चेम्बर में झोंक दिया जाता था और उन्हें मौत के घाट उतरा जाता था। फ़िल्म में इन परिस्थितियों के बीच पड़े एक पिता द्वारा अपने बच्चे को बचाने के संघर्ष को दिखाया गया है, जिसकी विस्तार पूर्वक चर्चा हम आगे करेंगे।

फ़िल्म को दो भागों में बाँटा जा सकता है। प्रथम भाग प्रेम-प्रसंग और हास्य से भरपूर है, वहीं दूसरा भाग

आँखों में आँसू तो लाता है पर मुस्कराहट के साथ। यही इस फिल्म की खासियत है।

गुइडो ओरेफिस (रोबर्टो बेनाइनी) जो कि इटली का रहने वाला यहूदी है। अपनी पिछली ज़िन्दगी को छोड़कर वह अपने चाचा के पास शहर जाता है जहाँ वह वेटर का काम करने लगता है। गुइडो एक हँसोड़ा किस्म का तेज़-तर्रार व्यक्ति है। वह अपने मजाकिए अंदाज़ से सबों को हँसाता रहता है और मुश्किल से मुश्किल परिस्थितियों से भी वह आसानी से बचकर निकल आता है। एक दिन उसकी मुलाकात डोरा (निकोलेटा ब्राशी) से होती है और फिर उसे उससे प्यार हो जाता है। आगे उन दोनों की मुलाकात बार-बार होती है, वह भी बिना किसी प्लान के। वह डोरा को जब भी मिलता है बहुत हँसाता है इसलिए डोरा भी उसकी तरफ आकर्षित होती है। डोरा एक टीचर है और वह यहूदी नहीं है। जल्द ही डोरा की शादी एक अमीर आदमी से तय हो जाती है जो एक सरकारी अफसर है, परन्तु स्वभाव से अभिमानी है। गुइडो कई बार कोशिश कर डोरा में अपनी रुचि दिखाता है तथा उसके पास आने की कोशिश करता है और अपने हास्यास्पद अंदाज़ में अपने प्यार का इज़हार भी करता है। डोरा इन्हीं सब कारणों से उसकी तरफ आकर्षित होती है और उसे अपनी इंगेजमेंट पार्टी से ले जाने की बात कहती है। गुइडो सबों के सामने ही घोड़े पर बिठाकर उसे उस पार्टी से चुराकर ले जाता है। फिर दोनों शादी कर लेते हैं और उसका एक बेटा भी होता है, जोस्वा।

फ़िल्म का ये हिस्सा मनोरंजन और हास्य से भरपूर है। गुइडो (रोबर्टो बेनाइनी) की अदाकारी बेहतरीन है। उनके बारे में रोजर एबर्ट कहते हैं, “watching his adventures, we are reminded of chaplin”²

फ़िल्म का दूसरा भाग इटली में चल रहे राजनीतिक हलचल से शुरू होती है। इस भाग में गुइडो तथा डोरा का बेटा 5 साल का हो चुका होता है और इस वक्त गुइडो एक किताब की दुकान चला रहा होता है। उनकी ज़िन्दगी हँसी-खुशी से गुजर रही होती है, तभी फ़िल्म में एक दुःखद घटना घटती है। जहाँ डोरा अपनी माँ को साथ लाती है अपने बच्चे से मिलवाने, वहीं पता चलता है कि जोस्वा तथा गुइडो को फासिस्ट पकड़कर ले गए हैं। उस दिन जोस्वा का जन्मदिन भी होता है। इधर बहुत

सारे यहूदियों को एक साथ एक ट्रेन में लादकर डेथ कैंप ले जा रहे होते हैं। डोरा भी वहाँ पहुँचती है पर गार्ड उसे मना करता है क्योंकि वह यहूदी नहीं होती है। फिर भी वह नहीं मानती और कहती है मुझे उस ट्रेन में जाने दें। फिर उसे भी उस ट्रेन में डाल दिया जाता है जहाँ जोस्वा अपनी माँ को उसी ट्रेन में चढ़ते देख बहुत खुश होता है। यहाँ से फ़िल्म में हास्य तथा त्रास्दी साथ-साथ चलते हैं। जोस्वा को पता नहीं कि उसे कहाँ ले जाया जा रहा है पर उसका पिता गुइडो उसे बताता है कि उसे जन्मदिन का तोहफ़ा मिलेगा। गाड़ी में सवार सभी लोग को डेथ कैंप पहुँचा दिया जाता है। गुइडो अपने हास्यास्पद अंदाज़ में अपने बेटे को हँसाता रहता है तथा उसे बताता है कि यहाँ एक गेम खेला जा रहा है तथा जीतने वाले को एक टैंक ईनाम में मिलेगा जो खिलौना नहीं सचमुच का टैंक होगा और इस गेम के कुछ नियम हैं जिसे तोड़ने वाले को गेम से बहार कर दिया जाएगा। इस गेम को जीतने के लिए उसे 1000 पॉइंट्स बनाने होंगे। इस तरह गुइडो सच्ची परिस्थितियों को जोस्वा से छुपाता है और मज़ाक-मज़ाक में लाउडस्पीकर के माध्यम से अपनी पत्नी डोरा को यह सन्देश भी देता है कि वह और उसका बेटा यहीं पास में ही है। जब भी जोस्वा अपनी माँ के पास जाने की बात करता या भूख लगी है कहता तो उसे गुइडो बताता कि ये गेम के नियम के विरुद्ध है और ऐसा करने वाले के पॉइंट्स काट लिए जाएँगे।

गुइडो का किरदार इतना हास्यास्पद है कि वह किसी भी परिस्थिति में अपने हँसी-मज़ाक से ही बाहर आ जाता है और वही उसकी ताकत है। रोजर एबर्ट लिखते हैं, “Benigni isn't really making comedy out of the holocaust, anyway. He is showing how Guido uses the only gift at his command to protect his son. If he had a gun, he would shoot at the fascist. If he had an army he would destroy them. He is a clown, and comedy is his weapon.”³

एक दृश्य में जब वह जोस्वा को गैर यहूदी बच्चों के बीच खाना खिलाने ले जाता है और उसे समझाता है कि तुम्हें कुछ भी नहीं बोलना है, फिर भी गलती से जोस्वा कुछ बोल पड़ता है जिससे गार्ड को शक हो जाता

है परन्तु गुइडो कुछ ऐसा माहौल बना देता है कि सभी बच्चे वही बोलने लगते हैं। और ऐसे वह अपने बच्चे की जान बचा लेता है। फ़िल्म के अंत तक गुइडो उस गेम खेलने की कहानी को बनाए रखता है और एक रात जब वह अपनी पत्नी डोरा की तलाश कर रहा होता है तो वह पकड़ा जाता है और जोस्वा को जिस डब्बे में उसने छुपाया होता है वहाँ आखों से छुपे रहने का इशारा करता है और जोस्वा भी उसे इशारा करता है कि वह छुपा रहेगा। इसतरह वह गेम चलता ही रहता है। पर फासिस्ट उसे (गुइडो को) दूसरी तरफ ले जाकर गोली मार देते हैं और अगले दिन जब जोस्वा उस डब्बे से बाहर आता है तब तक U.S. मिलेट्री टैंक लेकर वहाँ पहुँच चुकी होती है। जोस्वा समझता है कि वह गेम जीत चुका है। मिलेट्री मैन उसे अपनी टैंक में बिठा लेता है और आगे बढ़ता है, जहाँ जोस्वा दूर खड़ी अपनी माँ डोरा को देखता है और फिर दोनों माँ-बेटे मिल जाते हैं। जोस्वा कहता है कि वह गेम जीत गया।

इस तरह पूरी फिल्म दर्शकों को बांधे रखती है और अपना सन्देश देने में सफल होती है कि “लाइफ़ इज़ ब्यूटीफ़ुल”। ये पूरी कहानी शुरू और अंत जोस्वा के द्वारा नैरेट किया जा रहा होता है जिसमें वह अपने परिवार के लिए पिता द्वारा किए गए बलिदान को याद करता है।

पात्रों में गुइडो (रोबर्टो बेनाइनी), डोरा(निकोलेटा ब्राशी), जोस्वा (जारजिया कैन्ट्रिनी), डॉ. लेसिंग (हैरेस्ट बुकोल्ज) आदि का अभिनय शानदार है। इस फिल्म के बारे में अपनी राय देते हुए लेखिका रोज़न बर्ग लिखती हैं, “I must say that I think Roberto Benigni (the writer, director and actor) created a masterpiece that touches your heart- not only do your eyes burn from tears.”⁴

फ़िल्म में जो घटनाएँ हैं वह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इटली में चल रहे यहूदियों के खिलाफ़ भयावह परिदृश्य को उजागर करती हैं।

उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर यह कहा जा सकता है कि एक बेहतरीन फ़िल्म के लिए उस फ़िल्म के हर क्षेत्र यथा निर्देशन, कहानी, अभिनय, संगीत और प्रस्तुतीकरण आदि में अच्छा होना चाहिए और ‘लाइफ़ इज़ ब्यूटीफ़ुल’ एक ऐसी ही फ़िल्म है। हिटलर और मुसोलिनी के ज़माने में यहूदियों के साथ हो रही अमानवीयता और इटली के राजनीतिक-सामाजिक घटनाक्रमों को चित्रित करती यह फ़िल्म जिसमें एक पिता, पुत्र और उसकी माता के जीवन में घटित हो रहे परिदृश्य को इस अंदाज़ में पेश करना कि पूरी फ़िल्म हास्यास्पद लगे पर उसके पीछे जो करुणा छिपी है वो किसी का भी हृदय द्रवित कर दे, ऐसा जादू सिर्फ़ रोबर्टो बेनाइनी ही कर सकते थे। उन्होंने न सिर्फ़ फ़िल्म में निर्देशन बल्कि अभिनय और लेखन भी किया है जो एक कलाकार की अद्भुत क्षमता को दर्शाता है। यही वजह है कि उन्हें इस फ़िल्म के लिए सर्वश्रेष्ठ अभिनेता का ऑस्कर पुरस्कार भी मिला तथा इस फ़िल्म को अन्य कई पुरस्कार भी मिले। साथ ही यह फिल्म पूरी दुनिया में सराही गई और दर्शकों का दिल जीतने में कामयाब रही।

सन्दर्भ

1. एबर्ट, रोजर, (review),
www.rogerebert.com
2. वही
3. वही
4. रोजनबर्ग, जेनिफर, (review),
www.history1900.about.com